मधुमक्खियाँ उत्पादन वृद्धि में सहायक; इन पर रसायनों का प्रयोग न करें
गोमूत्र का प्रयोग मधुमक्खियों को रोगरहित रखने में सहायक

पंतनगर। 8 फरवरी, 2010। कृषि में उत्पादन वृद्धि में मधुमक्खियों का विषेष योगदान होता है क्योंकि फसलों में 85 प्रतिषत पर–परागण, जो अच्छे उत्पादन हेतु आवष्यक होता है, मधुमक्खियों द्वारा ही किया जाता है। फूलों से रस एकत्रित करने की प्रक्रिया के दौरान एक फूल से दूसरे फूल पर बैठने से पर–परागण कर मधुमक्खियाँ फसलोत्पादन में योगदान करती हैं, लेकिन किसानों में यह भ्रांति देखी गयी है कि मधुमक्खियाँ उनकी फसलों से रस चूसकर उन्हें सुखा देती हैं जो असत्य है। वास्तव में फूलों में रस ग्रंथियाँ होती हैं जिनमें से निरंतर रस का स्राव होता रहता है। किसानों को अपने खेतों में मौन–पेटिकाओं (मधुमक्खी के छत्ते) को भी रखना चाहिए ताकि पर–परागण द्वारा बीज बन सके और फसल का उत्पादन बढ़ सके।

विष्वविद्यालय के कीट विज्ञान विभाग में सहायक प्राध्यापक, डा. रूचिरा तिवारी, ने बताया कि किसानों को यह ध्यान रखना चाहिए कि फूल खिलते समय किसी प्रकार का कीटनाषक या रासायनिक दवाओं का प्रयोग न करें क्योंकि इससे मधुमक्खियाँ भी मर सकती हैं तथा मौनवंष की हानि होने के साथ–साथ उत्पादन में भी गिरावट आ सकती है। उन्होंने बताया कि मधुवाटिका व मौनवंषों में 10–15 दिन के अंतराल पर सिर्फ गोमूत्र का ही छिड़काव (20–30 मि.ली. गोमूत्र/8–10 फ्रेम) करते रहने से मधुमक्खियों को रोगों तथा शत्रुओं से भी बचाया जा सकता है। गोमूत्र यदि देषी गाय का हो तो अच्छा है अपितु अन्य नसल की गाय का मूत्र भी एकत्र कर प्रयोग में लाया जा सकता है।

डा. तिवारी ने बताया कि उत्तराखण्ड में मधुमक्खियों में लगने वाले जीवाणुजनित, विषाणु–जनित पेचिष रोग, रेंगना, मधुमक्खियों में आपस में होने वाली लूटपाट तथा बर्रों का आक्रमण होने पर गोमूत्र का प्रयोग कर मौनपालकों द्वारा सफल प्रबन्धन किया जा सकता है। मौनवंषों में लगने वाले माईट–जनित रोग का नियंत्रण भी गोमूत्र के छिड़काव के बाद अप्रत्यक्ष रूप से होता है। उन्होंने यह भी बताया कि बाहरीप माईट, वरोआ, का प्रकोप होने पर मधुमक्खी पालक मौनवंषों के प्रभावित भाग पर गोमूत्र का छिड़काव करें तथा तलपट पर अखबार या अन्य कागज का टुकड़ा बिछायें जिस पर हल्की गोंद लगी हो। गोमूत्र छिड़कने पर मधुमक्खियों में कार्य करने की क्षमता बढ़ने से वे सफाई का कार्य करना बढ़ा देती हैं जिससे पूरे मौनवंष की सफाई होने से माईट जिन कोष्ठकों में या जिन मधुमक्खियों के शरीर पर चिपके होते है वे नीचे गिर जाते हैं तथा गोंद लगे कागज पर चिपककर मर जाते हैं। इसी प्रकार, मोमी पतंगे के आक्रमण होने पर मधुमक्खियाँ इनकी सूंड़ियों को निकाल कर बाहर फेंक देती है।

डा. तिवारी ने अनुसार गोमूत्र को संचित कर कई महीनों तक रखा जा सकता है लेकिन किसी सुरक्षित स्थान पर डिब्बे या किसी अन्य पात्र में बंद करके रखना चाहिए। गोमूत्र के प्रयोग के दौरान किसी और रासायनिक दवाई जैसे सल्फर, फार्मिक अम्ल, थायमॉल, टेरामाइसिन आदि का प्रयोग नहीं करना चाहिए। गोमूत्र का कोई विपरीत प्रभाव नहीं पाया गया है। इसके प्रयोग से शहद के उत्पादन में भी वृद्धि हुई है। डा. तिवारी ने यह भी बताया कि मौनपलकों के लिये फरवरी व मार्च के महीने में नई रानी मधुमक्खी को बनाना सर्वोत्तम होता है। इस समय अनुकूल मौसम होने के कारण मौनवंष सषक्त होते हैं अपितु इन मजबूत मौनवंषों का विभाजन कर पुरानी रानी हटाकर नई रानी मधुमक्खियों को बनाना चाहिए। ताकि पूरे वर्ष मौनवंष सषक्त बना रहे।